[redacted] [redacted]

वर्ष-१६ अंक-१०
२७ अक्टूबर २०१८

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2018-20
एक प्रति- २०.०० रु.

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

※ एक दृष्टि में आर्य समाज ※

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक रवि
मासिक

वर्ष 16 अंक–10

27 अक्टूबर 2018
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 194

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गाँधी
कार्या. फोन : 0755 4220549

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन : 07324 226566

सह सम्पादक
श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता
एक प्रति – 20–00 रू.
वार्षिक – 200–00 रू.
आजीवन – 1000–00 रू.

विज्ञापन की दरें
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 500 रू.
पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) 400 रू.
आधा पृष्ठ (अन्दर का) 250 रू.
चौथाई पृष्ठ 150 रू.

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	**दीपावली की शुभकामनाएँ**	4
2.	**सम्पादकीय**	5
3.	दीपावली पर्व	7
4.	तीर्थ स्नान क्या ?	9
5.	बोध कथा	12
6.	विचार करें आर्य नाम से	13
7.	एक और स्वतन्त्रता संग्राम जरूरी है	14
8.	कविता – श्रद्धांजलि	16
9.	आर्यों का महाकुंभ – अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018	18–26

नवम्बर माह के पर्व त्यौहार एवं जयन्ती

भाई परमानन्द जयन्ती	5
शारदीय नवसंस्येष्टि पर्व	7
लाला लाजपतराय पुण्य तिथी	17
बटुकेश्वर दत्त जयन्ती	18
रानी लक्ष्मीबाई जयन्ती	19

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

दीप

नन्हें दीपक ने ज्यों,
अन्धकार को ललकारा है।
बढ़ती दानवता ने आज,
मानवता को नकारा है।।

निराशा संस्कृति नहीं हमारी,
विश्वास ही इतिहास हमारा है।
ऐ सोने वालों जागो,
आने वाला कल तुम्हारा है।।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" को,
जीवन सन्देश बना डालो।
जितने बुझे पड़े हैं दीप,
उठकर सारे जला डालो।।

— ***प्रकाश आर्य, महू***

दीपावली के ज्योति पर्व पर परमात्मा आप सबके हृदय ज्ञान प्रकाश से आलौकित कर दे, सुख समृद्धि स्वास्थ प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना है। दीपोत्सव मंगलमय हो।

शुभेच्छु :

समस्त कार्यकारिणी सदस्य एवं पदाधिकारीगण
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

सम्पादकीय –

प्रदर्शन से लुप्त होता दर्शन

प्रदर्शन किसी भी वस्तु, व्यक्ति, विचार का बाहरी स्वरूप है और दर्शन आन्तरिक।

किसी भी वस्तु विचार, व्यक्ति, स्थान की ऊपरी पहचान प्रदर्शन से अवश्य होती है किन्तु मात्र प्रदर्शन से उसकी पूर्णता नहीं होती है उस प्रदर्शन के पीछे छिपा दर्शन ही उसका मूल होता है। जैसे नारियल, बादाम, अखरोट का दर्शनीय रूप और है लेकिन वास्तव में उपयोगिता उसके अन्दर छिपे पदार्थ से है।

समाज आज इस मूल्यवान विचार से भटक गया है और इसीलिए उसका परिणाम जो वह सोचता है, जैसा वह चाहता है वैसा प्राप्त न होते हुए विपरीत ही रहता है। जब मनुष्य दर्शन से दूर रहता है तो ही वह प्रदर्शन तक सीमित रह जाता है और यथार्त से दूर जाता है। प्रायः आज हमने एक धार्मिक व्यक्ति की पहचान उसके ज्ञान, बुद्धि, संयम, तपस्या और दिनचर्या से जो उसकी कसौटी उसका महत्व हैं उन्हें न देखते हुए मात्र उसके वस्त्र, कंठी माला तिलक दाड़ी और बेशकीमती विलासिता से युक्त जीवन बड़े–बड़े आश्रमों को चेला चेली की सेख्या को ही मान लिया है। मनुष्य बाहरी स्वरूप के प्रति दिल से प्रभावित होता है दिमाग से नहीं। किसी को स्वीकार करने, उसे अपनाने या उसे मान्यता देने के पहले यदि दिल और दिमाग दोनों का उपयोग किया जाए तो व्यक्ति प्रदर्शन तक ही नहीं, दर्शन तक पहुंच जाता है।

सोने चांदी का व्यापारी दुकान पर बैठकर जब सोना खरीदता है तो उसके हाथ में आये हुए गहने के बाहरी रूप को देखकर वह प्रभावित नहीं होता है। बाहरी रूप तो उसे सोने की चमक से भी ज्यादा प्रभावित कर सकता है। किन्तु ये बाहरी रूप उस धातु का प्रदर्शन है, भीतरी स्वरूप उसका गुण स्वर्ण है। इसलिए सोना खरीदने के पहले वह कसौटी पर घिसकर, परीक्षण कर उसके मूल दर्शन तक पहुंचता है, तब वह सही वस्तु को प्राप्त करता है।

किन्तु आज समाज प्रदर्शन में ही उलझकर रह गया है। प्रदर्शन में उलझा हुआ समाज, दर्शन से दूर रहकर वास्तविक लाभ से वंचित रह रहा है और भ्रम में जी रहा है। बाहरी प्रदर्शन से ही देश, धर्म और समाज की सेवा का नाटक करने वाले अनेक बहरूपिए करोड़ों–करोड़ों जनता को गुमराह कर ठग रहे हैं और इस कारण गलत विचारधारा और व्यक्तियों को मान्यता प्राप्त हो रही है। इसलिए कहा गया, पहले जानो फिर मानों।

परन्तु जमाना आज पहले बिना सोचे समझे बड़ी संख्या में एकत्रित दूसरों की मान्यता को आधार बनाकर पहले मानता है, फिर जानने का प्रयास करता है। आचार्य चाणक्य ने भी मात्र प्रदर्शन को देखकर उसे आत्मसात करनो गलत बताया और कहा मानव के पास परमात्मा ने हमें जो बुद्धि दी है जिसका उपयोग कर सत्य असत्य को तर्क पर जो सही उतरे उसे मानना चाहिए – **"यस्तर्केण अनुसंधन्ते स वेद नेतरः"**

आज समाज में बढ़ती हुई अव्यवस्था का कारण यही है कि हम जो मानते हैं वह वैसा नहीं है जैसा मानना चाहिए।

रावण के चारित्रिक पतन के कारण उसे नीचा दिखाने के लिए उसका सामुहिक रूप से पुतला दहन किया गया। इस दहन के पीछे भावना थी जिसका अपयश है, जिसकी अकीर्ति होती है, वह समाज में मरे हुए के समान होता है **"अकीर्ति सा मृत्यु"**

इसलिए लाखों साल के बाद भी उसके पुतले को बुराई का प्रतीक मानकर दहन किया जाता है। यह इस दहन के पीछे समाज को सन्देश देने का प्रतीक था। किन्तु समाज आज जो बुराई का प्रतीक था उसका पुतला बड़े से बड़ा बनाते है और मनोरंजन का एक और माध्यम उसे बना चुके हैं। इसलिए अतीत में जो दर्शन रावण दहन के पीछे था वह अब प्रदर्शन बनकर रह गया। सीता हरण भी रावण के द्वारा साधू का ऊपरी प्रदर्शन करके ही तो हुआ था। वही परिपाटी आज भी चल रही है। अनेक साधू, सन्त, विद्वान, नेता का बाहरी रूप धारण किए हुए व्यक्ति व्यक्ति अनेक प्रकार के घृणित कार्यों में उलझे हैं लेकिन भ्रमित समाज उन्हें अपना आराध्य मानकर पूज रहा है।

दीपावली का त्यौहार प्राचीन पर्व है। कृषि प्रधान देश में नए अन्न की फसल आने पर खुशियॉ मनाकर उस प्रभु का धन्यवाद करने के लिए यज्ञ किया जाता था। अब केवल दीपमाला, फटाखे, मकान की सजावट तक ही इस विचार को समझ रहे हैं तथा कहीं–कहीं जुआं खेलना प्रचलन में आ गया है और दर्शन से दूर हैं। इसलिए किसी भी स्थान, व्यक्ति, विचार और वस्तु के प्रदर्शन पर ही आकर्षित होना बुद्धिमानी नहीं है, प्रदर्शन के पीछे की भावना दर्शन मुख्य है। यदि ऐसा किया जाए तो शोषण, परेशानियों व संकटों से बचा जा सकता है।

प्रेरणा का स्त्रोत

दीपावली पर्व

– डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

हमारा देश पर्वों का देश है वर्ष में किसी न किसी रूप में हम इन्हें मनाते रहते हैं। मुख्य रूप से यह त्यौहार मनाने का कारण महापुरूषों से संबंधित किसी घटना के कारण, ऋतु परिवर्तन के समय पर, अथवा राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक धारणाओं के कारण या नई फसलों के आने पर मनाए जाते हैं।

पर्व मनाने का जब तक उस पर्व का हमारा मनाना मात्र ऊपरी दिखावा ही होगा। सही कारण ना जानने से कहीं–कहीं उसमें विकृति आ रही है हम शुभ अवसर पर अशुभ या अनुचित कृत्य करने लगे हैं। जैसे होली पर शराब, भांग का सेवन, रंग के स्थान पर कीचड़, डामर, रंग, पेन्ट आदि क्षति कारक पदार्थों का प्रयोग। इसी प्रकार दीपावली पर जुआ खेलने का प्रचलन।

वर्ष में बारह पूर्णिमा और बारह अमावस्यो होती है। अश्विनी पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) को चन्द्रमा का सबसे अधिक प्रकाश होता है तथा कार्तिक अमावस्या (दीपावली को सबसे अधिक घना अन्धकार होता है) घने अन्धकार को दूर करने का प्रयत्न मनुष्य दीपमाला (दीप पंक्ति) के द्वारा करता है क्योंकि परमेश्वर के बनाये हुए दीपक सूर्य–चन्द्रमा के सामने मनुष्य की दीपक जैसी स्थिति है।

वर्षा ऋतु के बाद जब नया अनाज कृषक के घर आता है तो वह अनाज की प्राप्ति के साधन बैल, गाय, मजदूरादि का सम्मान और पूजादि करता है। इसी प्रकार व्यापारी व्यापार में जिन कर्मचारियों के माध्यम से धन कमाता है उनका सम्मान भी इस दिन करता है जिससे वे पूरी मेहनत और निष्ठा से व्यापार कार्य में लगे रहे। धन की प्राप्ति के साधन मशीन इत्यादि की देखभाल, मरम्मत, रंग रोगनादि इस पर्व पर कराया जाता है। जिससे पूरे वर्ष तक मशीन ठीक तरह से चलती रहती है। उसी का विकृत रूप मशीनों की पूजा करना, अगबत्ती जलाना, उन पर तिलक करना, नारियल फोड़ना इत्यादि प्रचलित हो गया है। धन जिन साधनों से प्राप्त होता है। उनका तो सम्मान किया ही जाता है। किन्तु जिस परमात्मा की महती कृपा से मनुष्य अन्न और धन प्राप्त करने के योग्य बना है। उसको भी धन्यवाद देना उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मनुष्य का कर्तव्य है। इसी दृष्टि से परमात्मा की पूजा, लक्ष्मी के रूप में प्रचलित हो गई है। परमात्मा का एक नाम लक्ष्मी भी है। उसकी उपासना करना, उसके प्रति आभार प्रकट करना, उसको धन्यवाद देने का परिवर्तित रूप आज लक्ष्मी पूजा प्रचलित हो गया है। परमात्मा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये

घर–घर में इसके विशेष यज्ञ किये जाते हैं। इसका परिवर्तित रूप यह हो गया है कि जब तक भगवान को न खिलाये, भोग न लगेगा। तब तक हमें नया अन्न नहीं खाना चाहिए। इसलिये नयी मक्का जब आती है। तब किसान सबसे पहले पांच मुट्ठी मन्दिर में भगवान के भोग के लिये ले जाता है और उसके बाद दूसरे दिन खाना प्रारंभ करता है। दीपावली को अनाज के नये दाने देवी देवताओं के सामने अग्नि जलाकर घी के साथ उन्हें इस विश्वास के साथ डालता है कि जिस भगवान की कृपा से हमें अन्न प्राप्त हुआ है, उसे भोग लगाकर खयेगें। इस तरह यज्ञ करके नया अन्न खाना शुरू करता है। इस प्रकार परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये जीवन में अन्धकार को दूर करके प्रकाश फैलाने के लिये दीपावली का पर्व मनाया जाता है।

आर्यों के लिये इस पर्व का महत्व और भी अधिक है क्योंकि इसी दिन सारे संसार में अविद्यारूपी अन्धकार को दूर करके मानव जीवन में प्रकाश फैलाते हुए युग निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने नश्वर शरीर का परित्याग किया। ईश्वर और धर्म के नाम पर छाये हुए अविद्या रूपी बादलों को दूर करके वेद विद्या और ज्ञान का प्रकाश फैलाया और इस कार्य के लिये अपना बलिदान भी कर दिया। यह पर्व हमें प्रेरणा दे रहा है कि अज्ञान, पाखण्ड अन्य विश्वास को दूर करके हम वेदों का प्रकाश फैलाने का अथक प्रयास करें। जिससे मनुष्यों का जीवन सुखदायी और वैभवशाली हो। पर्व हमें प्रेरणा, सन्देश (संबल) मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इसलिये उसे समझकर मनाना ही वास्तविक रूप से पर्वों को मनाना हैं।

राजा भर्तृहरि की दृष्टि में

रूढ़िवादी, अन्धश्रद्धा में लिप्त केवल परम्परा को ही महत्व देने वालों के लिए भर्तृहरि लिखते हैं।

प्रसह्य मणि मुद्धरेन्मकर वक्त्र दंष्ट्रांतरात्
समुद्रमपि सन्तरेत् प्रचलदूर्मिमालाऽऽकुलम्।
भुजंगमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद् धारयेत्
न तु प्रतिनिविष्ट मूर्खजनचित्तमाराधयेत्।।

भावार्थ – अपनी योग्यता से मनुष्य भले ही मगरमच्छ की दाड़ो में से मणि को निकाल ले, भले ही विशाल समुद्र की उत्ताल लहरों को चीरते हुए तैरकर पार चला जाए, क्रोधित विषधर को पुष्प की भांति अपने शीश पर धारण कर ले किन्तु मूर्ख पुरूष के मन को जो किसी विशेष वस्तु पर जम गया है, वहां से हटाना कठिन हीं नहीं सर्वथा असंभव है।

तीर्थ स्नान क्या ?

– प्रकाश आर्य, महू

जीवन में अज्ञानरूपी अन्धेरा जीवन दर्शन को छिपा देता है। उसका ही परिणाम होता है मनुष्य किसी बात से, जैसी वह है उसे वैसा नहीं देख पाता और भटक जाता है।

मानव जीवन में अनेक विचारधारा और मान्यताएं ऐसी हैं जिनके सही स्वरूप से हमारा परिचय नहीं है किन्तु उसके नाम से प्रचलित विचारधारा में हम विश्वास करके जी रहे हैं। इस विषय पर सबसे पहले हम तीर्थ पर विचार करते हैं। तीर्थ को हम कैसे मान रहे हैं और मानना कैसे चाहिए।

तीर्थ का अर्थ हम किसी पवित्र नदी, कुण्ड, जलाशय या प्रवाहित किसी धारा में स्नान करने को समझते हैं।

हमारी मान्यता है कि ऐसी किसी धार्मिक भावना से प्रसिद्ध नदी, कुण्ड, सरोवर में स्नान कर लेने से पुण्य मिलता है, पाप दूर हो जाते हैं, जीवन पवित्र हो जाता है।

इतना ही नहीं हमारे पूर्वज जो अब इस संसार से बिदा ले चुके हैं, कहीं जन्म ले चुके हैं, देह त्याग चुके हैं उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी आस्थियॉ (चिता में जलाकर बची राख व कुछ हड्डियों के टुकड़े) जिन्हें फूल भी कहते हैं यदि उनको पवित्र नदी में, तालाब में डाल दिया जावे तो उन दिवंगत व्यक्तियों को भी मुक्ति मिल जाती है, ऐसी भी मान्यता है।

फिर किसी खास समय, विशेष दिन या पर्व पर स्नान करने का तो और भी बड़ा महत्व है। ग्यारस, अमावस्या, पूर्णिमा आदि ऐसे दिनों में स्नान का बड़ा भारी महत्व बताया गया है।

वास्तव में आज दुनिया में सबसे बड़ा व्यापार धर्म की आड़ में धर्म के नाम पर चल रहा है। धर्म के नाम पर कोरी आस्था व विवेक हीन मान्यता चल रही है इसमें ज्ञान व तर्क को कोई स्थान नहीं है। धर्म और ईश्वर को लेकर मानव समाज में प्रायः भेड़ चाल दिखाई देती है।

इसका लाभ लेने के लिए धर्म के नाम पर वास्तविकता से हटकर अपने लाभों की प्राप्ति के लिए तीर्थ का महत्व बढ़ा–चढ़ाकर बताया गया और मात्र जल स्नान से ही सारे पाप, दुःख कष्टों से मुक्ति और पुण्य प्राप्ति बता दी। किन्तु ज्ञान से रिक्त धार्मिक आस्था में बहकर पुण्य कमाने का सरल, सस्ता, बिना जीवन पवित्रता के, कर्मों के फल की अव्हेलना करके यह मार्ग सबको सहज लगा और इसके प्रति जन सामान्य आकर्षित हो गया। एक महत्वपूर्ण बात है इस पर ध्यान देवें, ज्ञान विहीन मान्यता, अन्ध श्रद्धा है वह कभी लाभकारी नहीं होती, भ्रम में ही भटकाते रहती है। इसलिए तीर्थ स्थान मानने के पहले हम तीर्थ का अर्थ समझ लें कि तीर्थ किसे कहा –

जनः येन तरति तत् तीर्थम जिससे जीवन तर जावे, जीवन उन्नति हो जावे वह तीर्थ है।

यह जीवन दो तत्वों से बना है, एक शरीर, दूसरा आत्मा।

शरीर जड़ है वह स्वयं कुछ नहीं कर सकता, शरीर के अंग आत्मा के बिना कोई महत्व नहीं रखते, उनका अस्तित्व ही नहीं रह सकता। शरीर सेवक और आत्मा स्वामी है। सुख–दुःख–मोक्ष का संबंध शरीर से नहीं आत्मा से है, किए गए प्रत्येक कर्मों का फल जन्म–जन्मान्तरों तक आत्मा को भोगना होता है। कर्मों का फल इसी जन्म में भोग कर समाप्त नहीं होता किन्तु शरीर का अस्तित्व कुछ काल के लिए होता है और आत्मा कभी मरती ही नहीं, उसकी यात्रा अनन्त है। यात्रा अनन्त होने से ही वह कर्म फलों को कई जन्मों तक भोगती है। कर्म का संबंध आत्मा से है शरीर से नहीं। शरीर तो स्वामी (आत्मा) के लिए कार्य करता है। जैसे सेठ की ओर से काम करने वाले नौकर को व्यापार की लाभ हानि से कोई मतलब नहीं होता। काम भले ही वह करे किन्तु हानि का संबंध मालिक से होता है। इसलिए वैसे ही कर्मफल शरीर नहीं आत्मा भोगती है।

जीवन उन्नति ज्ञानमय, स्वाध्याय, सत्संग से, सतकर्मों से होती है और यह विषय आत्मा का है, शरीर का नहीं। इसलिए पाप पुण्य का माध्यम आत्मा है शरीर नहीं। आत्मा तो शरीर से काम करवाती है, धर्म, अधर्म करने का माध्यम शरीर है परन्तु आदेश आत्मा देती है।

आत्मा शुद्ध, पवित्र और ज्ञानयुक्त होने से ही जीवन का उद्धार होगा, जीवन उन्नत होगा, धर्म की ओर प्रेरित होगा, पुण्य की प्राप्ति होगी।

अब विचार करें जल स्नान से शरीर स्वच्छ होगा या आत्मा ?

संसार के महान विचारक, धर्मवेत्ता आचार्य मनु कहते हैं –

अभ्दिर्गात्राणि शुध्यति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्या तपोभ्यां भूतात्मा, बुर्द्धिज्ञानेन शुध्यति।।

अर्थात् – पानी से शरीर, सत्यता से मन, विद्या और तप से आत्मा तथा सत्य ज्ञान से बुद्धि की शुद्धि होती है। वस्त्र, वस्तु, शरीर की बाहरी शुद्धि तो पानी से हो सकती है किन्तु आत्मिक शुद्धि का तो कुछ और तरीका बताया है। पानी को तीर्थ मानने वालों को श्री भागवत पुराण 85 स्कंध श्लोक 10 में गधा कहा गया है।

विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक आचार्य चाणक्य कहते हैं –

तीर्थेषु पशुयज्ञेसु काष्ठ पाषाण मृण्मये।
प्रतिमायां मनोयेषां ते नराः मूढ़ चेतसः।।

कहा गया, जल तीर्थ को ही सबकुछ मानने वाले व्यक्ति मूर्ख से भी मूर्ख हैं।

यह भी महत्वपूर्ण बात ध्यान देने योग्य है – मनुष्य को उसके द्वारा किए गए शुभ या अशुभ कर्म का ही फल भोग के रूप में प्राप्त होता है और वह भोग जब तक भोगना पड़ते हैं जब तक उनके फल पूरे न हो जावें।

हमारे कर्मों के अनुसार उन कर्मों के फल देना ईश्वर का कार्य है। ईश्वर का कार्य पूर्ण निष्पक्ष तथा त्रुटि रहित है उसमें कोई भी किसी भी प्रकार का परिवर्तन या हस्तक्षेप नहीं कर सकता। फिर स्नान पूजा–पाठ से उसके न्याय में अन्तर नहीं आ सकता उसकी न्याय व्यवस्था अटल है।

प्ररन्तु तीर्थ का बड़ा महत्व है परन्तु तीर्थ वही जिससे आत्मा की ब्रद्धि, ज्ञान वृद्धि, पाप कर्मों से मुक्ति, पुण्य के प्रति भावों का सृजन हो। यह ज्ञान, स्वाध्याय, सत्संग से संभव है, कहा गया –

सत्संग परं तीर्थ, सत्संग परं पद्म।
तस्मात् सर्व परितज्य सत्संग सततं कुरू।।

सत्संग तो परम तीर्थ है परम् स्थान है, उसे कभी छोड़ना नहीं चाहिए। ऐसा क्यों कहा, इस पर ध्यान देना चाहिए। सत्संग से सत्य मार्ग, सत् ज्ञान की प्राप्ति होती है, आत्मोन्नति होती है इसलिए इसे तीर्थ कहा।

सत्य तीर्थ, क्षमा तीर्थ तीर्थ मिन्द्रिय निग्रह,
सर्वभूत दया तीर्थ, तीर्थ मार्जमेव च,
ज्ञान तीर्थ तपस्तीर्थ कथितं तीर्थ सप्तकं।

अर्थात् – सत्य बोलना, क्षमाशील होना, कर्मेद्रिय व ज्ञानेन्द्रियों को वश में रखना, सब प्राणियों पर दया, सरलता का जीवन ज्ञानमय व तपस्वी जीवन में सात प्रकार के तीर्थ है।

कहीं पर भी जल स्नान को तीर्थ नहीं कहा गया। किन्तु हम न जाने किस मान्यता व अन्ध श्रद्धा में पानी के स्नान को ही तीर्थ समझकर भटक रहे हैं।

नदी, पहाड़, जंगल, ये स्वास्थ और प्रसन्नतादायक है। इन स्थानों पर स्वमेव, मन पर आध्यात्मिक वातावरण निर्मित होता है। किन्तु उन स्थानों पर जाने से ही नहीं, उन स्थानों पर जाकर एकान्त में ध्यान, तप, स्वाध्याय, सत्संग करके जीवात्मा की उन्नति करने से उनका लाभ है।

नदी स्नान करने से ही यदि पापों से, कष्टों से मुक्ति मिल जाती तो उसके किनारे पर रहने वाले तो कष्टों से दूर और स्वर्ग प्राप्त करेगें वे दुःखी क्यों रहेगें ? किन्तु ध्यान से जाकर देखिए, प्रायः तीर्थ स्थानों पर रहने वाले दुकानदार, पण्डे, पुजारी, कितने ठग होते हैं इसका अनुमान वहां जाकर लगता है। जो नित्य प्रति उस पवित्र नदी के पानी का उपयोग खाने–पीने, नहाने में कर रहे हैं उनकी आत्मा शुद्ध नहीं हुई तो एक–दो बार स्नान से आपको लाभ मिल जावेगा, यह सोचना कहां तक उचित है ?

हॉ नदियों का, तालाबों का स्वच्छ जल जो वनस्पतियों व खनिजों से युक्त है, उसके स्नान से स्वास्थ को लाभ अवश्य मिलता है, इसलिए उनका स्नान शरीर के लिए लाभदायक है किन्तु आत्मोन्नति के लिए किंचित भी नहीं।

बोध कथा –

कौन बड़ा

एक बार वाणी, चक्षु, कान, मन और प्राण में अपनी–अपनी श्रेष्ठता को लेकर विवाद छिड़ गया। हर कोई अपने को बड़ा कहता ाा। काफी समय इसमें ही गुजर गया। फिर भी इस प्रश्न का हल नहीं हुआ।

फिर इन्द्रियों ने कहा – इस विवाद का निपटारा करने के लिए प्रजापति के पास चलना चाहिए। वह इसका समाधान कर देगें। इन्द्रियाँ प्रजापति के पास पहुँची।

इन्द्रियों ने विवाद की जानकारी प्रजापति को दी। प्रजापति बोले – तुम में से जिसके न रहने पर शरीर माटी हो जाए, वही सर्वश्रेष्ठ है।

सबसे पहले वाणी नें शरीर को छोड़ दिया। फिर भी शरीर की गतिविधियों में खास फर्क नहीं आया। सालभर बाद वाणी लौटी, उसने देखा, सोचा – मुझ वाणी के न रहने पर भी शरीर पहले की तरह कार्य कर रहा है। उसका चेहरा लटक गया।

अब चक्षु ने शरीर छोड़ा। उसके न रहने पर मनुष्य को दिखाई देना बन्द हो गया। साल बीता, चक्षु ने देखा – शरीर सामान्य है। सोचा मेरे न रहने पर आदमी को विशेष फर्क नहीं पड़ा, मन मारकर उसने दोबारा शरीर में प्रवेश किया।

अब कान ने शरीर छोड़ा। फिर भी शरीर पहले सा ही रहा। साल भर बाद कान लौटा तो हैरान था, कारण शरीर की गतिविधियाँ ज्यों की त्यों थीं। उसने पूछा – मेरे बिना तुम जिन्दा कैसे रहे ?

जैसे बहरा आदमी रहता है। आदमी बोला।

फिर मन ने शरीर को छोड़ा, एक साल बाद लौटा तो उसे जवाब मिला, बच्चे मन के न रहने पर सिर्फ मानसिक विकास नहीं कर पाते, लेकिन अन्य कार्य तो करते हैं। यह सुन मन भी मन मारकर शरीर में जा बैठा।

जब बारी आयी प्राण की, वह शरीर से निकलने लगा तो इन्द्रियाँ डगमगाने लगीं। शरीर खतरे में पड़ गया। इन्द्रियाँ घबरा गई। उन्होंने प्रार्थना की – प्राण आप हमें छोड़कर न जाएँ, आप चले गए, तो हमारा क्या होगा ? आप ही हममें सर्वश्रेष्ठ हैं।

प्राण ने कहा – ठीक है, अब मैं शरीर नहीं छोड़ूँगा। यह सुन इन्द्रियों ने चैन की साँस ली।

विचार करें आर्य नाम से इतनी दूरी क्यों ?

सभी धर्मप्रेमी सज्जनों आज एक बात पर विचार करते हैं जो हमारा सनातन नाम था हमने उसको क्यों छोड़ दिया, आपके मन में आर्य शब्द से इतनी दूरी कैसे हो गई, इतने श्रेष्ठ नाम को आपने क्यों त्याग दिया कारण जैसे कोई बालक अपने पिता का नाम और कार्य जानने के लिए तथा स्वरूप जानने के लिए अपनी माता के पास न जाए अपनी माता से न पूछे और दूसरे गॉव के लोगों से पूछने लगे कि मेरा पिता कौन है, कैसा है, उसका नाम क्या है और मेरा पिता कार्य क्या करता है, जरा विचार कीजिए क्या उस बालक को अपने पिता के बारे में सही जानकारी मिल पाएगी, आपका भी यही उत्तर होगा, बिलकुल नहीं क्योंकि पिता के बारे में सही और पूर्ण जानकारी तो केवल बच्चे की मॉ ही रखती है और वही बच्चे को भलीभांति उसके पिता के बारे में बता सकती है दूसरे गॉव के लोगों ने बालक को उसके पिता का नाम गलत बता दिया, पता भी गलत बताया और काम भी गलत बता दिया, कह दिया वह तो चोरी करता है, तेरा पिता तो शराब पीता है, दुराचारी है, सोचिए बालक को गलत जानकारी के कारण अपने पिता से घृणा हो जाएगी। वह कभी भी अपने पिता का नाम लेना भी पसन्द नहीं करेगा अपने पिता से दूरी बना लेगा। कारण ! गलत जानकारी यही सब आपके साथ भी हुआ है। आप भी गलत जानकारी के कारण आर्य शब्द से इतनी दूर हो गए आइए इतिहास के कुछ पन्ने पलट कर देखते हैं मुस्लिम लुटेरे आक्रांताओं और चालाक लोमड़ी वृत्ति वाले अंग्रेजों ने फूट डालो राज करो के अन्तर्गत योजनाबद्ध तरीके से कुछ हमारे अपने ही लोगों को अर्थात ब्राह्मणों को लालच देकर व डरा धमकाकर षड़यन्त्र के अन्तर्गत मनगढ़ंत झूठा इतिहास रच डाला। अनेकों प्रकार से हमें भ्रमित किया गया। जैसे नम्बर 1– आर्य लोग बाहर से आए थे। नम्बर 2– आर्य लोग मांस खाते थे। नम्बर 3– जंगली थे इन्हें कोई तकनीकी ज्ञान भी नहीं था। इत्यादि झूठा भ्रम फैलाया गया और आप लोगों ने अपने अत्यन्त भोलेपन के कारण और नासमझी के कारण अर्थात इन धूर्तों के छल को न समझने के कारण इस महा विनाशकारी झूठ के बोझ को अपने ऊपर लाद लिया। इसके बाद आपने अपने खास लोगों से ही मुंह फेर लिया और फिर इन दुष्ट भेड़ियों के पीछे चल दिए। यदि आप इनसे पूछें कि इण्ड़िया और हिन्दुस्तान से पहले इस देश का क्या नाम था, इस देश को आयावर्त क्यों कहते हैं आर्य किस संस्कृति को मानने वाले थे उनका धर्म क्या था, तो फिर चुप हो जाएंगे और कुछ भी उत्तर नहीं दे पाएंगे। आपने इन धूर्तों

के बहकावे में आकर अपनों से ही मुंह मोड़ लिया और अपना सनातन नाम त्याग दिया। वास्तविकता तो यह है कि हम सब सनातन धर्म को मानने वाले आर्य हैं और आदि सृष्टि से ही हमारा यही नाम है। व्याकरण के अनुसार ऋगतौधातु से आर्य शब्द बनता है जो निरन्तर गतिशील आत्मोन्नति के लिए प्रयत्नशील सत्य सनातन वैदिक धर्म के मानने वाले ईश्वर भक्त सत्य आचरण शील पवित्र मन वाले धर्मात्मा शब्द अर्थ संबंध को जानने वाले विज्ञान के द्वारा पदार्थ विद्या की सिद्धि से संसार का उपकार करने वाले वेदादि सत्य शास्त्रों के मर्म को जानने वाले विद्वान राष्ट्र भक्त श्रेष्ठ लोगों का नाम आर्य है। हमारा नाम आर्य है और हमसब सनातन वैदिक धर्म को मानने वाले लोग आदि सृष्टि से इसी देश के मूल निवासी हैं। यही भारत आर्यावर्त हमारा देश है और इसकी उन्नति तथा तन मन धन से रक्षा करना हम सबका परम धर्म है। सनातन पवित्र वैदिक संस्कृति ही हमारी पहचान है जो संसार की प्रथम संस्कृति है। यही संस्कृति उदारता का महान उदाहरण प्रस्तुत करते हुए वसुधैव कुटुम्बकम का नारा देकर संसार को एक सूत्र में बांधने पिरोने का अद्वितीय कार्य करती है आइए वैदिक साहित्य का सूक्ष्मता से अवलोकन करके अपने आर्य नाम संस्कृति और अपने आर्यावर्त देश से संबंधित कुछ प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। नम्बर 1– कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, ऋग्वेद 9/63/5 नम्बर 2– आर्यावृता विसृजन्तो अधिक्षमि ऋग्वेद 10/65/11 नम्बर 3– अहम भूमिमददाम आर्याय ऋग्वेद 4/26/2 बाल्मीकि रामायण आयोध्याकांड सर्ग 75। महाभारत उद्योगपर्व विदुर नीति अध्याय 1। चाणक्य कौटिल्य अर्थशास्त्र इसके अतिरिक्त सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा यजुर्वेद अध्याय 7 मन्त्र 14 और मनुस्मृति आदि हमारे प्राचीन ऋषि ग्रंथों में हजारों प्रमाण भरे पड़े हैं। यदि विस्तार से देखना चाहते हैं तो बाल्मीकि रामायण और महाभारत पढ़िए मनुस्मृति आदि ग्रंथ का अवलोकन कीजिए, विस्तार भय से हम अधिक प्रमाण नहीं दे पा रहे हैं। हमारे देश को आर्यावर्त इसीलिए कहते थे क्योंकि यह देश श्रेष्ठ विद्वान धर्मात्मा पवित्र आचरण वाले लोगों से परिपूर्ण था। यहां कोई चोर, लुटेरा, दुराचारी, कंजूस नहीं था। बिना संध्या यज्ञ किए कोई भोजन नहीं करता था सब पवित्र आचरण वाले थे। विदेशी लोग यहां आकर ऋषि मुनियों के गुरूकुलों में शिक्षा प्राप्त करके हमारे चरित्र बल और विद्या की यशोगाथा गाते थे। ऐसा था दुनिया का गुरू शिरोमणि आर्यों का आर्यावर्त देश। जबसे हमने अपना आर्य नाम त्याग दिया तबसे आर्यत्व के गुण समाप्त हो गए अर्थात हम अपने पराक्रम, शौर्य बल, विद्या से भी हीन हो गए और ज्ञानेन हीनपशुभिसमाना हमारी इसी पाशविक प्रवृत्ति में हमें

विदेशियों का गुलाम बना दिया। फिर विदेशी मुस्लिम आक्रान्ताओं ने हमारे असली नाम आर्य के स्थान पर अपमानजनक शब्द हिन्दू नाम थोप दिया, यह हिन्दू शब्द न तो हमारे किसी धर्मग्रंथ में है न यह शब्द देवनागरी भाषा का है और न संस्कृति का है। यह फारसी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ फारसी व्याकरण में चोर, काला, काफिर, धर्म और ईमान से रहित ऐसा अर्थ है। इतना ही नहीं अंग्रेजों ने भी हमारे भोलेपन का नाजायज फायदा उठाया और हमारे ऊपर अपमानजनक शब्द इण्डियन थोप दिया और हमारे देश का नाम भी इण्डिया कर दिया। इसका अर्थ भी यदि आप देखना चाहते हैं तो इन्टरनेट पर भी देख सकते हैं इन्टरनेट पर इण्डिया शब्द का अर्थ इतना लिखकर सर्च कर दीजिए पूरा विवरण आ जाएगा। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की बड़ी डिक्शनरी के पेज 789 के अनुसार इण्ड़ियन शब्द का अर्थ है, घिसे पिटे अपराधी प्रवृत्ति के लोग जिनकी कोई औकात नहीं, ऐसा अर्थ दिया हुआ है। जरा ऑखें खोलों ! कब तक किस–किस की गालियां खाते रहोगे। अपने आर्य नाम और आर्यत्व के गुणों को फिर से धारण करो। हमारे पूर्वज श्रीराम, श्रीकृष्ण, महावीर हनुमान सभी आर्य थे, उन्हीं के मार्ग पर चलकर हम फिर से अपने गौरव को प्राप्त कर सकते हैं। आर्य समाज आपको जगा रहा है, उठो जागो तथा अपने अन्दर सोए हुए शौर्य और पराक्रम को जगाओ। गौमाता तड़प रही है। ललनाओं की लाज लुट रही है। हमारी मातृभूमि रक्षा के लिए हमें पुकार रही है। तन मन धन से तैयार होकर उठा लो श्रीराम का धनुष, श्रीकृष्णजी का चक्र सुदर्शन और महावीर हनुमान की गदा, मिटा दो अन्याय और अधर्म अत्याचार को, अतंकवाद को, और बचा लो अपने आर्य नाम को और आर्य संस्कृति को ! क्योंकि और कोई हमें बचाने नहीं आएगा। जब–जब सनातन संस्कृति और धर्म पर ऑच आई आर्य समाज ने आगे आकर हमेशा अपना बलिदान दिया है और आज भी दिन रात सनातन धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए प्रयत्नशील है और आर्य को समझें और आर्य समाज के कार्यों का सूक्ष्मता से अवलोकन करें तभी हमसब की उन्नति संभव है।

– सुरेशचन्द्र शास्त्री

उपदेशक–

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

मोबाइल नं. 9165038356

श्रद्धांजलि

असंख्य बुझे दीपों में, जो तेल बाती बन जीता रहा।
प्रज्वलित करने दीपों को, तिल–तिल नित जलता रहा।।
लिए ओ3म् पताका कर में, कईबार मौत को जिसने ललकारा।
अदम्य साहस का प्रतीक, गुरूवर ऋषि दयानन्द प्यारा।।

बुझाकर खुद को, रौशनी जमाने में वो कर गया।
आया नहीं कोई पल, मौत से जब वह डर गया।।

एहसानों का हिसाब नहीं, कम पड़ जावें, फलक के तारें।
ले लिए जमाने के जिसने, खुद पर संकट सारे।।

पर उसकी नसीहत को, कौन कितना मान रहा।
गुरूदत्त, श्रद्धानन्द, अमीचन्द सा, दिखता अब शिष्य कहाॅ।।

हर किसी पर उसका है एहसान।
ऋणों से दबा है, सारा जहान।।

किन्तु, कृतज्ञ बन नहीं पाऐ, कृतघ्न बनते जा रहे।
बोया तो था आम उसने, पर बबूल के फूल आ रहे।
पर, सभी तो जगन्नाथ नहीं, कुछ तो ऋषि के हैं प्यारे।
चल रहा संगठन आज भी, उन्हीं के सहारे।

मात्र औपचारिकता में लिपटी, श्रद्धांजलि तो एक पाप है।
अपने गुरूवर के साथ, खुला ये विश्वासघात है।।

ऋषि का बलिदान सन्देश था महान,
विश्व को श्रेष्ठ बनाने का था आव्हान,

आर्यों, उसे आत्मसात करना जरूरी है।
वर्ना उसके प्रति श्रद्धांजलि अधूरी है।।
कार्य अधूरा पड़ा गुरूवर का, उसे पूरा है करना,
उसी के बताए पथ पर, निरन्तर आगे है बढ़ना।

देख रहा जमाना तुम्हें, आशा भरी निगाहों से,
गुजरना पड़ेगा यद्यपि, कंटकाकीर्ण राहों से,
तो आओ आज फिर संकल्प करें,
अग्नि परीक्षा देकर भी, निज कर्तव्यों को पूरा करें।
जब गुरूवर के बताए पथ, हम चलने लगेगें,
तभी सही अर्थों में हम सच्चे आर्य खुद को कहेगें।।

यह विश्वास जब आर्यजन में "**प्रकाश**" आवेगा।
तभी गगन मण्डल पर, वैदिक ध्वज लहरावेगा।।

– प्रकाश आर्य, महू

स्वास्थ के लिए

थोड़ा हंसिए भी

0 संतासिंह और बंतासिंह दोनों बहुत बड़े दुश्मन थे। ये दोनों एक ही बिल्डिंग में रहते थे। बंतासिंह सातवें माले पर रहता था और संतासिंह पहले। एक बार बिल्डिंग की लिफ्ट खराब हो गई। बंतासिंह ने सोचा कि आज संतासिंह को सबक सिखाया जाए। उसने संतासिंह को फोन करके खाने पर बुलाया। बेचारा संतासिंह जैसे तैसे सातवें माले पर पहुंचा और वहां जाकर देखा कि दरवाजे पर ताला लगा है और लिखा था कि कैसा उल्लू बनाया। संतासिंह को यह देखकर बहुत गुस्सा आया। उसने उस नोट के नीचे लिखा "मैं तो यहां आया ही नहीं था"

0 एक सरदार जी एक 25 मंजिला भवन की छत पर बैठे थे, तभी एक आदमी हांफता हुआ आया और कहने लगा कि संतासिंह आपकी पोती मर गई। सरदारजी ये खबर सुनकर बहुत हताश हो जाते हैं और बिल्डिंग से कूद पड़ते हैं। जब वो 20 वीं मंजिल तक पहुंचते हैं तो उन्हें ख्याल आता है कि उनकी तो कोई पोती ही नहीं है। 10 मंजिल आने पर ध्यान आता है कि उनकी तो शादी ही नहीं हुई है और जैसे ही जमीन पर गिरने वाले होते हैं कि ख्याल आता है कि उनका नाम तो संतासिंह है ही नहीं।

उत्साह, उमंग, नवचेतना के सन्देश देता हुआ

आर्यों का महाकुंभ – अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018

आर्य समाज के इतिहास में एक और गौरवमय अध्याय बन गया

प्रकाश आर्य

सभामन्त्री –

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

यह विचार कोरी कल्पना से या भावनात्मक दृष्टि से नहीं है यथार्तता है, जन–जन की भावना है। असंभव कुछ नहीं, आवश्यकता है सही कार्य के निर्णय की, कार्य की, सही योजना की, और उसके साथ पूर्ण पुरूषार्थ की। यह सब कहने और सुनने में तो कईबार आता रहा है किन्तु उसका प्रत्यक्ष परिणाम या उसका फल अन्तर्रा ट्रीय आर्य महासम्मेलन को देखने पर हुआ।

उपस्थित आर्यजनों ने अपनी कल्पना से ऊपर अकल्पनीय दृश्य देखकर आश्चर्य तो किया ही पर मुख से अकस्मात निकला आह........ वाह–वाह ...., गजब है............, कितना भव्य हैकृ ऐसा तो कोई सोच भी नहीं सकता था आदि विचार प्रत्येक आगन्तुक के भावों में या वाणी में और इससे भी अधिक उनकी विस्मयकारी ऑखों की और चेहरे की चमक से प्रसन्नता से प्रदर्शित हो रही थी।

प्रत्यक्ष रूप से मिलने वाला कोई व्यक्ति मिलता तो सबसे पहला शब्द यही होता बधाई हो, बहुत धन्यवाद इतना बड़ा और भव्य कार्यक्रम तो कभी सोचा ही नहीं, आनन्द आ गया। इस प्रकार की अभिव्यक्ति सभा के पदाधिकारियों या कार्यकर्ताओं को सुनने को मिल रही थी। आर्यजन आपस में ऐसे मिल रहे थे जैसे किसी पर्व पर प्रसन्न होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति इस आयोजन को सराह रहा था। कई कहते **"भूतो न भवि यति"** हम कहते भाई भूत का तो माना जा सकता है किन्तु भविष्य ना कहो, 2024 में महर्षि का 200 वॉं जन्म वर्ष है इसे इससे भी वृहद मनायेगें। यह सब शब्दों विचारों से पूर्ण भाव भंगिमा का होना स्वाभाविक ही था, इसमें कोई मिथ्या भाव या अतिश्योक्ति नहीं है।

कार्यक्रम को भव्य विशाल और सार्थकता प्रदान करने में तीन पहलुओं को देखना होगा। पहला है कार्यक्रम का विचार, उसकी योजना और पूरी रूपरेखा निर्मित करना। जिस प्रकार किसी इमारत के लिए एक व्यवस्थित, पूर्व से सोची विचारी योजना को कागज पर चित्रित किया जाता है जिसे नक्शा कहते हैं, यह नक्शा एक

प्रशिक्षित इन्जीनियर के मार्गदर्शन में तैयार होता है, उसके अनुसार भवन का निर्माण होता है, जैसा नक्शा वैसा भवन। ठीक उसी प्रकार इस कार्यक्रम की पूर्व प्लानिंग कई माह से होती रही जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रमुख अधिकारी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के बड़ी संख्या में अधिकारी, अन्य कई आर्य समाज के वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ताओं के द्वारा एक लम्बे समय के विचार विमर्श के पश्चात अनेक प्रबुद्ध विचारशील आर्यजनों ने सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य के नेतृत्व में इसे अन्तिम रूप दिया। भाई धर्मपाल आर्य को सम्मेलन का संयोजक मनोनीत किया था; उनके साथ ही श्री विनय आर्य की सक्रियता इसकी एक विशेष कड़ी रही। जब योजना अच्छी थी तो उसका व्यवहारिक रूप तो अच्छा अवश्यमेव होना था।

कार्यक्रम सफलता का दूसरा पहलू था – उस योजना का क्रियान्वयन करने वाले आर्यजन। **इसमें पहले पैसा,** संसार में पैसा सबकुछ नहीं है, किन्तु बहुत कुछ है, इससे कोई मना नहीं कर सकता। योजना का आधार धन होता है। यदि धन की व्यवस्था प्रचुर मात्रा में नहीं होती तो कितनी भी सुन्दर योजना होती वह योजना, योजना ही रह जाती। परमात्मा की कृपा से महर्षि व वैदिक धर्म अनुयायी भामाषाह बनकर आगे आये और कार्यकर्ताओं को निश्चित कर दिया, इस महान कार्य की तैयारी के लिए।

इसमें सर्वप्रथम वर्तमान आर्य जगत के सर्वाधिक तन–मन–धन से सहयोगी आर्य समाज के भामाषाह कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी (एम.डी. एच.) कार्यक्रम के प्रचार–प्रसार में भी बहुत बड़ा सहयोग रहा। महाशय जी का उत्साह व सहयोग कितना था वह उनकी इस भावना से आप जान सकते हैं – **"सम्मेलन में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की ऐसी आवभगत करना जैसे जवाई राजा की होती है। खाने पीने में बढ़िया भोजन और शुद्ध घी का उपयोग हो।"** इसके साथ ही इस श्रृंखला में आर्थिक बड़े सहयोगी की दृष्टि से सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्यजी (जे.बी.एम.), श्री मुंजाल परिवार, श्री, अशोकजी चौहान (अमेटी), चौधरी शिवकुमारजी (प्रतिभा सिन्टेक्स), श्री दीनदयालजी गुप्ता (डॉलर), धर्मपाल आर्य –दिल्ली सभा प्रधान। इसके अतिरिक्त प्रान्तीय सभाओं से उनमें सबसे बड़ा सहयोग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्राप्त हुआ। जिन महानुभावों ने सम्मेलन के पूर्व सहयोग नहीं दिया था, उन्होंने सम्मेलन स्थल पर आकर अपना आर्थिक सहयोग दिया, जिनकी संख्या हजारों में रही। इस यज्ञ में छोटी से छोटी राशि देने वाले भी बड़े उत्साह से देकर अपने को भाग्यशाली मान रहे थे। इस प्रकार आर्थिक सहयोग देने हेतु पूरा आर्य जगत तैयार था।

इसी का दूसरा पहलु है – कार्यक्रम में उपस्थिति यह एक अद्‌भुद दृश्य था, जब हजारों–हजारों की संख्या में आर्यजन दिखाई पड़ते। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी नगर या ग्राम में कोई जात्रा – मेला लगा हुआ है, जिसमें बच्चे, जवान, बूढ़े सभी देखने के लिए आए हुए हैं।

यदि सारी व्यवस्थाएें ठीक हो जाती, विद्वान वक्ता भी उपस्थित हो जाते किन्तु श्रोता के रूप में उपस्थिति कम होती तो ? फिर तो इस कारण से सारा किया गया प्रयास व्यर्थ चले जाता। पूरे कार्यक्रम की सार्थकता, शोभा, बड़ी संख्या में उपस्थित श्रोताओं के कारण हुई।

कार्यक्रम की सफलता हेतु उपरोक्त तीनों कारण उपलब्ध थे, इसमें प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से हजारों कार्यकर्ताओं का अथक पुरूषार्थ, दानदाताओं, विद्वानों का सहयोग और परमपिता परमात्मा की अपार कृपा रही। इसलिए यह इतना भव्य व सफल हुआ।

इसी का तीसरा पहलू है कार्यकर्ताओं द्वारा इस योजना को सफल बनाने के लिए प्रयास। इस संबंध में मैं किसका नाम लूं किसका न लूं, यह एक बड़ी उलझन वाली स्थिति है। पूरे कार्यक्रम में जो कार्यकर्ताओं का मनोबल, उत्साह की पराकाष्टा देखने में आई उसे जुनून शब्द से समझा जा सकता है। तात्पर्य यह कि मनुष्य की उसी स्थिति को जुनून कहा जाता है जिसमें वह कुछ पाने के लिए अथवा कुछ कर गुजरने के लिए अपनी पूरी शक्ति और सबकुछ दाव पर लगाकर भी उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है। वही जुनून अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेल की सफलता के लिए जी जान से जुटे कार्यकर्ताओं में देखने को मिला। सक्रियता और उत्साह और लक्ष्य जब तीनों का मिश्रण हो जाए तो असफलता का कोई कारण ही नहीं बनता, जो ऑखों ने देखा, कानों ने सुना उसकी कल्पना तो हमें पहले ही हो चुकी थी। गॉव–गॉव, शहर, प्रान्तीय सभाऐं और भारत के बाहर कुछ देशों में जाकर प्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क करने का परिणाम इतनी विशाल जनसमुह की उपस्थिति एक स्थान पर हुई। निरन्तर कार्यकर्ताओं से और आर्यजनों से सम्पर्क बना रहा। बार–बार उन्हें आने के लिए आव्हान किया गया। इसके पश्चात रातदिन कार्यकर्ता इसमें जुटे रहे, जैसे–जैसे समय आ रहा था वैसे–वैसे कार्यकर्ताओं की सक्रियता जिम्मेदारियां और मन में एक चिन्ता बढ़ते जा रही थी। चिन्ता इसलिए बढ़ रही थी कि जो अनुमान था उससे अधिक उपस्थिति का अनुमान हो गया था। यह भी हो गया था कि इतने सारे व्यक्तियों की व्यवस्था जो कठिन कार्य है वह कहीं बिगड़ न जाए किन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और दिल्ली की सारी आर्य समाजें उनके सारे सदस्य विशेषकर आर्य वीर दल जो जगवीरसिंह और बृहस्पति आर्य के साथ कार्य कर रहा था, वह विशेष सहयोगी रहा। 60 बसें जो यात्रियों को लाने–ले जाने का कार्य रातदिन कर रही थीं उसमें आर्य वीर दल की बड़ी हिस्सेदारी रही। सभी कार्यकर्ताओं ने, दिल्ली निवासियों ने अतिथि देव की परम्परा को निर्वाह करने में जुट गए और उसमें वे सफल हो गए, इतनी आत्मीयता इतना समर्पण परिवार की परिवार जिस कार्य को पूर्ण करने में लगे हों, वहां ऐसी भव्यता होना आश्चर्य वाली बात नहीं है। इस कार्यक्रम में देश के कौने–कौने से आर्यजन पहुंचें, कार्यकर्ता के रूप में भी उनका सहयोग प्राप्त होता रहा। भावनात्मक और आत्मीक संबंल भी उनसे मिलता रहा। एक इस कार्यक्रम का एक संबंल रहा।

चौथा बिन्दु था, कार्यक्रम को गरिमा प्रदान करने वाले कार्यक्रम और उनकी प्रस्तुती के लिए आमन्त्रित वक्तागण, विद्वान अतिथि एवं श्रोतागण।

इस कार्यक्रम में तीनों ही बातों का पूर्ण समावेश था। कार्यक्रम के जो सत्र. थे प्रत्येक सत्र समाज, राष्ट्र, वैदिक धर्म कुरीतियों एवं पाखण्ड़ से संबंधित थे और प्रत्येक विषय पर जो वक्ता आमन्त्रित किए गए थे वे बहुत ही विद्वता पूर्ण सामयिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए उनके उद्‌बोधन हुए। स्थापित भजनोपदेशकों की उपस्थिति हुई उपस्थिति की दृष्टि से भारत वर्ष के अनेक क्षेत्र से श्रद्धालु उपस्थित रहे 2000 से अधिक आर्यजनों की 28 देशों से उपस्थिति रही। जिसमें पाकिस्तान, बंगला देश, द.अफ्रिका, मॉरिशस, सूरीनाम, हालैण्ड, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर, थाईलैण्ड, कैनेड़ा, फिजी, नेपाल, बर्मा, इंग्लैण्ड, कीनिया, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों से प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे। इतने प्रतिनिधियों का एक उद्‌देश्य के लिए उपस्थिति होना कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने के लिए था।

आगन्तुक महानुभाव – कार्यक्रम में पधारने वाले सन्यासी, विद्वान, भजनोपदेशक एवं सामाजिक व राजनैतिक दृष्टिं से पहचान रखने वाले 500 से अधिक महानुभाव पधारे थे।

वक्ता के रूप में अनेक सन्यासीगण और विद्वानों को आमन्त्रित किया गया था। जिसमें स्वामी धर्मानन्दजी, स्वामी प्रणवानन्दजी, स्वामी देवव्रतजी, स्वामी विवेकानन्दजी, स्वामी सम्पूर्णानन्दजी, स्वामी व्रतानन्दजी, स्वामी सदानन्दजी, स्वामी गोविन्दागिरीजी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी शारदानन्दजी, स्वामी सुधानन्दजी, स्वामी चिदानन्दजी, स्वामी विदेह योगीजी, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, स्वामी धर्ममुनीजी, साध्वी उत्तमायति जी, साध्वी पुष्पाजी।

विद्वान – डॉ. सोमदेव शास्त्री, डा. वेदपालजी, डॉ. महेन्द्र अग्रवालजी, डॉ. ज्वलन्दा जी, डॉ. प्रशस्क मित्रजी, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीशजी, आचार्य वागीशजी एटा, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. महेश वेदालंकार, आचार्य अग्निव्रतजी, आचार्य सनतकुमारजी, डॉ. जयेन्द्र (नोएडा), डॉ. कर्णदेवजी, आचार्य पुनीत शास्त्रीजी, डॉ. रामकृष्ण शास्त्रीजी, डॉ. वीरपाल विद्यालंकारजी, डॉ. दुलाल शास्त्रीजी, डॉ. सूर्यादेवीजी, डॉ. नन्दिताजी, डॉ. अन्नपूर्णाजी, डॉ. प्रियवन्दाजी, आचार्या गायत्री जी (नोएड़ा), डॉ. पवित्रा विद्यालंकारजी, डॉ. उमा आर्याजी,

भजनोपदेशक – योगेशदत्तजी, पं. सत्यपालजी पथिक, नरेशदत्तजी, कुलदीपजी, अंजलीजी, कुलदीप विद्यार्थी जी, श्री दिनेश पथिक, घनश्याम प्रेमीजी, जगत वर्माजी, आचार्य अशोकजी, आचार्य मोहित शास्त्रीजी, भानुप्रताप शास्त्रीजी, केशवदेव शर्माजी, कल्याणदेवजी।

कार्यक्रम का प्रारंभ महाशय धर्मपालजी (एम.डी.एच.) एवं सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य के करकमलों से ओ3म् ध्वजारोहण कर किया गया। टाण्ड़ा की कन्याओं ने ध्वज गीत गाया। तत्पश्चात कार्यक्रम का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति माननीय राम नाथ जी कोविन्द के माध्यम से हुआ। अपने उद्बोधन में पूर्व परिचय में परिवार के सदस्यों का आर्य समाज से जुड़ने एवं स्वयं को कानपुर के आर्य विद्यालय से शिक्षा ग्रहण करना बताया। इस अवसर पर हिमाचल के राज्यपाल माननीय आचार्य देवव्रतजी, सिक्किम के राज्यपाल माननीय गंगाप्रसादजी, केन्द्रीय मन्त्री श्री हर्षवर्धनजी, श्री सत्यपाल सिंहजी, सांसद श्री स्वामी सुमेधानन्दजी, मेयर ...., स्वामी गोविन्दगिरी जी आदि की उपस्थिति रही। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथजी, हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहर खट्टर, वित्तमन्त्री श्री केप्टन अभिमन्यु, योग गुरू स्वामी रामदेवजी पतंजलि, आचार्य बालक भणजी तथा समापन के अवसर पर भारत के गृहमंत्री राजनाथसिंह जी, इसके अतिरिक्त विश्व हिन्दु परिषद, आर. एस. एस. तथा कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री रमाकान्त गोस्वामी, दिल्ली प्रदेश के उपमन्त्री श्री मनीष सिसोदिया. आदि उपस्थित थे। सबने अपने उद्बोधन से लाभान्वित किया।

उपरोक्त कारणों से कार्य की गंभीरता का सृजन हुआ जिसमें सभी क्षेत्र के महानुभावों का पूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम स्थल इतना विशाल था कि जिसमें एक स्वस्थ आदमी को भी पूरी तरह देखने में परेशानी हो रही थी, थकान हो जाती थी, इसलिए वृद्धजनों के लिए या जो पैदल नहीं चल सकते थे उनके लिए 10 ई–रिक्शा निःशुल्क भ्रमण व्यवस्था की गई थी, जिसमें हजारों व्यक्ति बैठकर वांछित स्थान पर जा रहे थे। कार्यक्रम का पाण्ड़ाल इतना भव्य और विशाल बना, जो दिल्ली की राजधानी में संभवतः नगण्य से स्थानों पर ही देखा जा सकता है, जिसमें बैठने की 12 से 15 हजार व्यक्तियों की क्षमता थी। उपस्थिति का पूर्व अनुमान होंने के कारण मुख्य पाण्ड़ाल के बाहर बड़े–बड़े स्क्रीन लगा रखे थे, जिनमें हजारों व्यक्ति पाण्ड़ाल के बाहर भी देखते पाए गए। पाण्ड़ाल पूरी तरह भरा रहा। इसके अतिरिक्त 16 कक्ष अलग से थे जिनमें अलग–अलग विषयों पर विद्वान लोग गोष्ठीयॉ कर रहे थे। बहुत ही विस्तृत अभूतपूर्व प्रदर्शनी जिसमें हजारों चित्र लगे थे आकर्षण का मुख्य केन्द्र था।

दक्षिण अफ्रिका की मूल कन्याओं ने वेद मन्त्र पाठ, हवन व भजन तथा साध्वी मत्रयी द्वारा सन्यास एक विशेष कार्य था। इस अवसर पर सन्यास व वानप्रस्थ दीक्षा ली गई।

कायक्रम की विशेषता – यह थी कि परमात्मा की कृपा से हजारों की दैनिक उपस्थिति में किसी प्रकार की कोई दुर्घटना घटित नहीं हुई, कोई अव्यवस्था नहीं हुई।

प्रत्येक ने यही कहा कि 2012 से भी अच्छी सर्वसुविधायुक्त यह कार्यक्रम रहा।

साहित्य – की लगभग 200 स्टॉल लगी थी जितना साहित्य व अन्य सामग्री इस अवसर पर हुई, उतनी कहीं कभी नहीं हुई, यह अपने आप में एक विशेषता रही।

कार्यक्रम स्थल अभूतपूर्व था – वैसे तो पूरा कार्यक्रम स्थल ही अपने आपमें सुसज्जित, सुन्दर, अकल्पनीय, साजसज्जा को देखकर ही मन्त्रमुग्ध हो रहे थे। मुख्य द्वार इतना विशाल और आकर्षक था, जिसे रास्ते से गुजरने वाला हर कोई देखने के लिए रूक कर देखता। इसके अतिरिक्त कुछ और विशेष कार्यक्रमों की सूची भी है जो पहलीबार हुए।

दिल्ली के अन्तर्गत स्थित विद्यालय के बच्चों की ओर से बहुत ही सैद्धांतिक तथा आर्य समाज के इतिहास पर अन्धविश्वास निवारण के लिए लघु नाटिकाएं प्रस्तुत की गई जिसे सभी ने सराहा।

दिल्ली प्रदेश की महिला संगठन का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

मुख्य पाण्ड़ाल के अतिरिक्त अलग–अलग छोटे 16 पाण्ड़ाल लगे थे, जिनमें निरन्तर गोष्ठियॉ चल रही थीं, जिनमें प्रश्न–उत्तर, शंका समाधान, प्रदर्शनी, यज्ञ, विज्ञान आदि पर विद्वान प्रवचन कर रहे थे।

आर्य वीर दल – आर्य वीर दल का प्रदर्शन सम्माननीय स्वामी देवव्रतजी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। लगभग 2।। घण्टे विभिन्न प्रान्तों से आर्य वीरों ने हैरत अंगज करने वाले प्रदर्शन किये।

लेजर शो – महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की प्रमुख घटनाओं पर लेजर शो का प्रसारण अद्‌भुत था, जिसे पहलीबार देखा गया। स्थान–स्थान पर महर्षि के चित्र व सन्देश, वेद वाक्य आदि लगाए गए थे।

वर्ल्ड रेकार्ड बना – विशाल स्थल पर 10,000 यज्ञ एक साथ करने का पहला अवसर था। विहंगम दृश्य आत्मविभोर कर रहा था। संसार में यह पहला अवसर था जब इतनी बड़ी संख्या में इसे सम्पन्न करवाया। इसे गोल्ड़ वर्ल्ड ने विश्व रेकार्ड में दर्ज किया गया।

गुजरात से 51 नवयुवकों द्वारा टंकारा से मोटर साईकल पर यात्रा निकाली जो विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में होती हुई दिल्ली पहुंची, जो आकर्षण का केन्द्र थी।

गुरूकुल–गौशाला–निरन्तर यज्ञ –

गुरूकुल व्यवस्था किस प्रकार होती है, किस प्रकार वहां की वेशभूषा दिनचर्या होती है, रहने की प्राचीन समय से क्या व्यवस्था, किस प्रकार आचार्य शिक्षा प्रदान करते थे, गौशाला किस प्रकार होती है आदि बातों को एक छोटे रूप में निर्मित कर निवास, प्रवचन, यज्ञ आदि बताया जा रहा था, जहॉ बड़ी संख्या में निरन्तर उपस्थिति बनी रही।

मुख्य यज्ञशाला – एक बहुत विशाल स्थल में बनी थी जिसकी भव्यता अपने आप में सबको आकर्षित कर रही थी। यज्ञ में ब्रह्मा के रूप में देश के ख्यातिनाम विद्वान विदूषी अलग–अलग समय में यज्ञ वेदी को सुशोभित करते रहे। सस्वर मन्त्रपाठ शिवगंज, चोटीपुरा, देहरादून, बाराणसी, हाथरस आदि गुरूकुल की कन्याओं द्वारा किया गया।

छोटी यज्ञशाला – इसके अतिरिक्त पास में ही एक छोटी यज्ञशाला निर्मित की गई थी, जिसमें निरन्तर यज्ञ चल रहा था। एक समय में 8 सदस्य बैठकर यज्ञ कर सकते थे। यह व्यवस्था दिल्ली की आर्य समाजों के पुरोहितगण के द्वारा संचालित थी। इसमें भी दिनभर यज्ञ के लिए यजमान उपलब्ध रहे।

भोजन व्यवस्था – इतनी बड़ी 30 से 40 हजार की भोजन करने वालों की उपस्थिति में किसी को भोजन हेतु इन्तजार न करना पड़े, लम्बी पंक्ति में खड़ा न होना पड़े, खाद्य पदार्थों की कमी न रहे, एक साथ कई प्रकार के व्यंजन उपलब्ध हों, यह सुनने में अविश्वसनीय लग रहा हो, किन्तु यह हुआ है। प्रत्येक आगन्तुक के लिए यह एक अचम्भा था। इस हेतु विशाल भोजनशाला, भोजन करने हेतु विशाल परिसर और निरन्तर चल रही व्यवस्था जिसमें सैकड़ों स्वयं सेवक व आर्यजन सहयोग कर रहे थे, उनके प्रयास से यह संभव हो सका। हर कोई भोजन में बने पदार्थों की पृथक–पृथक वैरायटी और स्वादिष्ट होने की प्रशंसा कर रहा था।

इसके अतिरिक्त – खाने पीने व भोजन बाजार में 30 प्रतिशत कम मूल्य पर दुकानदारों द्वारा व्यवस्था थी जहां शुद्ध सात्विक भोजन व खाद्य पदार्थ उपलब्ध थे। कुछ दुकानों पर तरह–तरह की मिठाई, नमकीन, चाट और भोजन उपलब्ध था। इसका उपयोग भी खूब हुआ।

योग गुरू स्वामी रामदेवजी पतंजलि की ओर से निःशुल्क जलेबी, दूध, छांछ, पानी का वितरण किया गया, जिसे लाखों लोगों ने ग्रहण किया।

सन्देश – आर्य समाज के विद्वान, सन्त, सन्यासी या पदाधिकारी तो आर्य समाज की बात महर्षि दयानन्द की प्रशंसा करते ही हैं, करेगें ही। इसका प्रभाव भी होता ही है किन्तु आपकी बात जब ऐसा कोई व्यक्ति जो प्रत्यक्ष रूप से आर्य समाज का कोई पदाधिकारी या सदस्य नहीं है, समाज में एक महत्वपूर्ण पद पर है यदि वह आपकी बात कहता है तो सारा संसार उसे अधिक महत्त्व देता है उससे प्रभावित होता है।

कार्यक्रम का लाईव प्रसार टी.वी. चैनल पर हो रहा था, यू ट्यूब, फेसबुक जैसे माध्यमों से भी कार्यक्रम की जानकारी फैल रही थी। जिसे कार्यक्रम स्थल के अतिरिक्त करोड़ों व्यक्ति अनेकों देशों में देख रहे थे। वक्ताओं द्वारा वैदिक धर्म की विशेषता आर्य समाज का योगदान और आवश्यकता पर विचार प्रकट हो रहे थे। ऐसे प्रेरणास्पद वैदिक धर्म व आर्य समाज से संबंधित विचार भारत के माननीय राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द जी के द्वारा हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी, सिक्किम के राज्यपाल माननीय श्री गंगाप्रसादजी द्वारा, आसाम के राज्यपाल माननीय श्री जगदीश मुखी जी, इसके अतिरिक्त केन्द्रीय मन्त्री श्री हर्षवर्धन जी, केन्द्रीय मन्त्री डॉ. सत्यपालसिंहजी, केन्द्रीय परिवहन मन्त्री श्री गड़करीजी, हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहर खट्टर एवं, यू. पी. के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथजी, दिल्ली प्रदेश के उपमन्त्री श्री मनीष सिसोदिया तथा भारत के गृहमन्त्री श्री राजनाथसिंहजी, स्वामी गोविन्दगिरीजी (भारत माता मन्दिर हरिद्वार)।

सभी माननीय वक्ताओं, आर्य समाज की श्रेष्ठता और आवश्यकता पर बड़ी मजबूती से व्याख्यान दिए। इससे पूरे मानव समाज पर आर्य समाज का एक अच्छा परिचय उसके कार्यों एवं महत्व को प्रोत्साहन मिला।

समलैंगिकता एवं यौन संबंधों की स्वतन्त्रता जैसे विषय पर चर्चा कर उससे समाज को बचाने के लिए भारत सरकार को ज्ञापन दिया।

जातिवाद, आरक्षण, नशामुक्ति जैसे विषयों पर गंभीर चर्चा कर इन बुराईयों से समाज को दूर करने पर चर्चा हुई।

वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य परिवार सम्मेलन, अन्धविश्वास निवारण सम्मेलन, आर्य वीर सम्मेलन, संस्कति एवं सामाजिक चेतना सम्मेलन, कवि सम्मेलन व अनेक विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

आर्य समाज के पूर्व में भी बड़े–बड़े भव्य आयोजन होते आये हैं, उनसे तुलना करना अज्ञानता है वे जिस परिस्थिति में हुए उसके अनुसार उनका महत्व था। आज परिस्थितियॉं, साधन, तकनीकी व्यवस्था सब बदले हुए हैं। इसलिए कार्यक्रम का स्वरूप, व्यवस्था और विशाल भव्यता अभूतपूर्व थी।

प्रत्येक कार्यक्रम व्यवस्थित हो, सार्थक हो इसका पूर्ण प्रयास किया गया। कार्यक्रमों को ठीक से संचालित करना एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है, इसलिए कार्यक्रम के व्यवस्थित संचाल ा हेतु कुशल व श्रेष्ठ अनुभवी वक्ताओं को सौंपी थी, जिसमें श्री विनय आर्य, श्री विनय वेदालंकार, श्री राजेन्द्र विद्यालंकार, श्री अशोकजी आर्य (उदयपुर), श्री वाचोनिधी आर्य, श्रीमती मदुला चौहान, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी (गुड़गॉंव), श्रीमती सुदेश आर्याजी, श्री सूर्यप्रसाद कीरे (हालैण्ड़), श्री सुरेन्द्र रैलीजी, श्री धर्मपाल आर्य, स्मारिका संयोजन श्री अजय सहगल, श्री सत्यवीरजी शास्त्री (अमरावती), श्री व्यासनन्दन शास्त्री (बिहार), श्री सतीष चड़ड़ाजी, आचार्य विरेन्द्र विक्रम (दिल्ली), डॉ. दक्षदेव जी (इन्दौर) आदि थे।

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य की सूझबूझ व कार्यक्रम को बड़ा सहयोग मिला। बीच में कुछ समय अस्वस्थ हो गए किन्तु उस स्थिति में भी दिल्ली रहकर रातदिन कार्य में जुटे रहे। वही स्थिति श्री विनय आर्य व कुछ और कार्यकर्ताओं की भी हो गई थी। किन्तु उस ओर ध्यान देकर एक ही धुन थी सम्मेलन–सम्मेलन। ऐसी लगन आर्यों में जागत हो तो समाज का पूरा चित्र ही बदल सकते हैं।

<u>**विशेष**</u> – ये पंक्तियॉं सम्मेलन के लिए जवाबदार सदस्यों, पदाधिकारियों की ओर से मैं निवेदन कर रहा हूँ।

सम्मेलन का उद्देश्य आर्यों की बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित कर वाहवाही लूटना कदापि नहीं था। उद्देश्य था निराशाभाव से घिरे कुछ आर्यजनों को संगठन शक्ति का परिचय देना था, और सम्मेलन में आकर यहॉं से एक संकल्प लेकर नव जागरण करना था। इस सम्मेलन में ऐसा बहुत कुछ हुआ। सम्मेलन में आने वालों को अपनी विशाल शक्ति देख उत्साह भी हुआ और प्रेरणा भी।

अच्छी से अच्छी व्यवस्था हो सके, अच्छे वक्ताओं से प्रेरणास्पद चर्चा के द्वारा एक सन्देश आर्यजनों तक पहुंचे। भोजन, निवास, आतिथ्य, अन्य आवश्यक आवश्यकताऐं उत्तम हो, इसका पूरा–पूरा ध्यान दिया गया। 2006 व 2012 में रही कुछ कमियों को ध्यान में रखते, उनकी पुनरावत्ती न हो प्रयास रहा। जिसमें पहले की अपेक्षा अधिक सफलता मिली किन्तु पूर्ण सफलता मिली यह नहीं कहा जा सकता।

पूर्णता तो परमेश्वर के ही कार्यों में है, हमसब कार्यकर्ता मानव हैं, इसलिए कुछ त्रुटियॉ, व्यवस्था, व्यवहार या कार्यक्रम की उपयोगिता की दृष्टि से होना स्वाभाविक है। इसके लिए हम सबको किसी आगन्तुक अतिथि, विद्वान या कार्यकर्त्ता को हुए ।ारीरिक और आत्मिक क्लेश, कष्ट के लिए हमें खेद है। ये त्रुटियॉ यदि रही भी तो किसी आलस्य, प्रमाद दुर्भावना के कारण नहीं, तात्कालीन परिस्थितियों के कारण, विशाल कार्यक्रम की व्यवस्था के कारण या मानवीय भूल के कारण रही होंगी। क पया इसे अन्यथा न लेवें। **किन्तु इनसे हमें अवगत अवश्य करावें ताकि भविष्य में ये पुनः न हो सके।**

कार्यक्रम का 28 अक्टूबर को समापन आपकी, हमारी यात्रा का यहॉ समापन नहीं विराम हुआ है। अब 2024 महर्षि के 200 वें जन्म दिवस की तैयारी में लगना है। आगामी कार्यक्रम इससे कई गुना बड़ा होगा, सारा विश्व स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व को जान जावेगा, उसकी तैयारी में हम सबको लगना है।

इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय कर्मठ, समर्पित कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, विद्वानों को तो है ही किन्तु प्रत्येक आर्य का भी है, जो दूर–दूर से चलकर कष्ट उठाकर यहॉ पहुँचे, अपनी उपस्थिति से इसकी गरिमा बढ़ाई। सभा की ओर से उन सबका आभार व्यक्त करता हूँ। इत्योम्

विशेष सूचना

ध्यान देवें – अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 के लिए जिनके पास कूपन अथवा रसीद कट्टे हैं, वे कृपया तुरन्त राशि एवं रसीद कट्टे मेरे निम्न पते पर भेजें। यदि उन्होंने दिल्ली कार्यालय में जमा कर दिए हैं तो उसकी जानकारी भी मुझे तुरन्त देवें। कृपया इस पर विशेष ध्यान देवें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

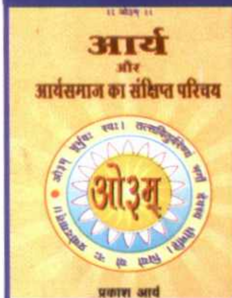

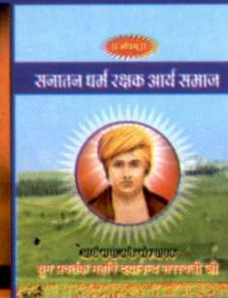

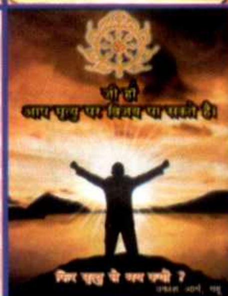

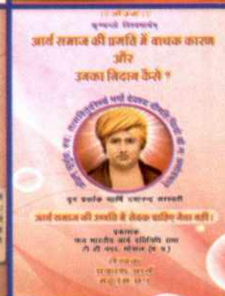

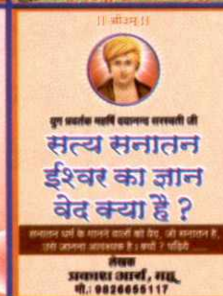

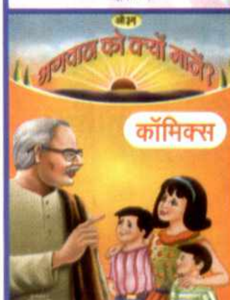

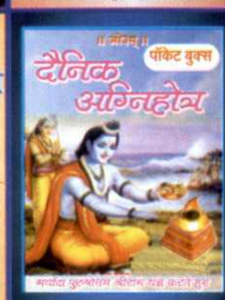

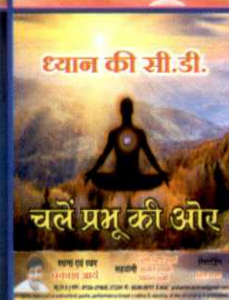

अगली प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य,पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना■सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

※ आर्य समाज के दस नियम ※

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, महू

AMIT CHATURVEDI # 98262-7106